RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 16 वां

अंक : 64वां

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

स्तुति विरल वाधर
जामनगर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

हमारे नये
प्रकाशन
जिनदेशना के रंग-
बच्चों के संग
रंगीन ड्रॉइंग बुक
मूल्य 35/-
जैन धर्म की प्यारी कवितायें
बाल शिविरों के लिये उपयोगी
कविता संग्रह, गाथायें, प्रार्थना,
नारे आदि के साथ
मूल्य 35/-
प्यारी धार्मिक कविताएँ
रोचक कविताओं का सुन्दर संग्रह
सचित्र और रंगीन पुस्तक - 17 कवितायें
मूल्य 15/-
लेखक
विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434
प्रकाशक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन
जबलपुर
अब नहीं भाग-1
अब नहीं भाग-2
Not Any more...
(English) Part-1
जीवन की छोटी-छोटी भूलों से सावधान
करने वाला लघु नाटक संग्रह
मूल्य 25/-
मूल्य 25/-
अधिक जानकारी के लिये पर
9752756445
पर व्हाट्सएप संदेश द्वारा संपर्क करें।
चहकती चेतना

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

अप्रेल - जून 2024

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स - गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन दिल्ली, श्री विवेक जैन बहरीन

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)
श्रीमती कोमल नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क.	विषय	पेज
1	सूची	1
2	हमारा वैभवः नागालैंड में जैन मंदिर	2
3	संपादकीय	3
4	प्लास्टिक में भोजन....	4-5
5	कुछ घटनायें जिनका उत्तर.....	6-7
6	नई साल-नई बात/गोखले की ईमानदारी	8
7	गुरुदेव की करुणा/ऐसी नौकरी ही नहीं करना	9
8	प्रेरक प्रसंग : महापुरुषों ..../जैसा बोओगे....	10
9	प्रेरक प्रसंग : समर्पण	11
10	निराली उदारता	12
11	कथा सुनो पुराण की : परीक्षा	13
12	हमारी संस्कृति का इतिहास	14
13	एक शिव मंदिर जो कभी ...	15
14	बुढ़िया के बाल खतरनाक है...	16-17
15	अब नहीं खिचवाऊँगा	18-19
16	जिनदेशना खेल महोत्सव/आगामी आयोजन	20
17	टाईम टेबल	21
18	समाचार : हमारे नये परम.../चहकती चेतना...	22
19	जन्मदिन	23
20	गेम : जोड़ी बनाईये	24
21	गेम : जैनी बच्चों को पाप.....	25
22	गेम : ज्वाइन द डॉट्स	26
23	गेम : वर्ड सर्च	27
24	गेम : क्रॉसवर्ड पजल	28
25	गेम : वर्ड सर्च	29
26	कविता	30
27	परिणामों की रक्षा करें	31
28	ऐसे क्या पाप किये	32

सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

हमारा वैभव

नागालैंड में जैन मंदिर

जिनशासन के गौरव के प्रमाण पूरे विश्व में समय - समय पर उपलब्ध होते रहे हैं। भारत की आजादी के पूर्व भारत में अधिकांश जैन परिवार राजधानी कोहिमा में निवास करते थे। भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में पहला जैन मंदिर सन 1920 में लगभग 20 सेठी परिवारों द्वारा स्थापित किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान द्वारा आक्रमण किये जाने पर ये परिवार दीमापुर चले गये। फिर इन परिवारों ने दीमापुर में दिगम्बर जैन मंदिर, एसडी जैन स्कूल और एसडी जैन चेरिटेबल हॉस्पिटल का निर्माण किया। दीमापुर में 1947 में जिनमंदिर स्थापित किया गया। यह मुख्य मार्ग पर ही स्थापित है। इस मंदिर के मूल नायक भगवान महावीर स्वामी हैं। मंदिर के पीछे वाले हिस्से में भगवान आदिनाथ, भगवान बाहुबली और भगवान भरत के जिनबिम्ब विराजमान किये गये हैं। इसका द्वितीय पंचकल्याणक 1989 में आयोजित हुआ। प्रथम मंजिल पर समवशरण और चौबीस तीर्थंकरों की भावमयी प्रतिमायें विराजमान की गईं हैं।

नागालैंड कुल की जनसंख्या का मात्र 0.1 प्रतिशत ही जैन हैं इसके बावजूद व्यवसाय में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। दीमापुर जैन समाज विभिन्न सामाजिक कार्यों में भी उत्साहपूर्वक तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करता है। इनके द्वारा नियमित रूप से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, राहत शिविर आयोजित किये जाते हैं।

जिनमंदिर का पता - वेस्ट यार्ड कॉलोनी, मारवाड़ी पट्टी, दीमापुर, नागालैंड भारत

संपादकीय

जैन धर्म की पॉजीटिविटी

आजकल जैन धर्म के संस्कारों के नाम पर अधिकांश जिनधर्मी खानपान तक सीमित रह जाते हैं। हम भोजन सम्बन्धी अभक्ष्य के त्याग की प्रेरणा बच्चों को देकर उन्हें भी त्याग करवाने को बहुत महान कार्य समझकर संतुष्ट हो जाते हैं। बच्चे भी माता-पिता की आज्ञा समझकर बिना जाने या थोड़ा जानकर अभक्ष्य छोड़ देते हैं। रात में भोजन मत करो, आलू-प्याज मत खाओ, बिस्किट-टॉफी मत खाओ, बाजार का केक या बाजार की वस्तुयें मत खाओ आदि आदि। एक बच्चे ने मुझसे पूछा कि हर बात में ये मत खाओ, वहाँ मत जाओ, ऐसा मत करो आदि ऐसी ही बातें घरों में चलतीं रहतीं हैं क्या इसी का नाम जैन धर्म है? ये सब नेगेटिव बातें हैं। कोई हमें ये नहीं बताता कि ऐसा आचरण करने से क्या फायदा है? मोक्ष मिलेगा - ये सब तो मुझे समझ नहीं आता और मिलेगा तो कब मिलेगा? इस पंचम काल में तो मोक्ष मिलता ही नहीं है। उसके इस प्रश्न ने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया कि नहीं करने का नाम ही जैन धर्म है। हमारे परिवेश में भी यहाँ कचरा नहीं फेकें, यहाँ बैठना मना है, यहाँ थूकना मना है, इसे छूना मना है आदि चलता है परन्तु कई देशों में इस तरह की व्यवस्था की गई है कचरा यहाँ फेकें, यहाँ पर बैठें आदि संदेश दिये जाते हैं।

क्या सच में बच्चों को कोई सकारात्मक संदेश नहीं दे पा रहे हैं? सच में इन अभक्ष्य त्याग के पहले उन्हें उसके लाभ भी बताना चाहिये। साथ ही जैन धर्म के सिद्धांतों और उसकी मूल भावना का भी परिचय करवाना चाहिये। बाजार में नहीं खाने से हम बाजार का गंदा भोजन नहीं खायेंगे तो हम बीमार नहीं पड़ेंगे, यदि हम गंदे लोगों की संगति से बचेंगे तो समाज में सन्मान मिलेगा, जब शराब, चोरी आदि व्यसन से बचे रहेंगे तो कोई अपराध नहीं होगा तो हम सुरक्षित रहेंगे। डॉक्टर भी रात्रि भोजन करने से मना करते हैं, इससे पाचन और स्वास्थ्य दोनों अच्छा रहता है। डॉक्टर भी रात्रि भोजन करने से मना करते हैं, इससे पाचन और स्वास्थ्य दोनों अच्छा रहता है।

हम स्वाध्याय करेंगे तो वस्तु स्वरूप का ज्ञान होगा और यह जब मालूम चलेगा कि प्रत्येक कार्य अपने पुण्य-पाप के अनुसार अपने समय पर ही होता है तो आकुलता नहीं होगी, डिप्रेशन नहीं होगा। हमें आत्महत्या जैसे गंदे विचार नहीं आयेंगे। हम हिंसा से बचेंगे तो पुण्य मिलेगा तो हो सकता कि हमारे पहले का बांधा हुआ पाप का उदय कमजोर हो जाये। जब ये मालूम चलेगा कि पुण्य से अधिक किसी भी जीव को सामग्री नहीं मिलती तो लोभ अपने काम कम हो जायेगा तो अनैतिक काम नहीं होंगे। स्वाध्याय से हमारे परिवार में शांति रहेगी, जिस परिवार में माता-पिता का सन्मान होगा वहाँ संस्कार स्वयं प्रवाहित होंगे।

इस तरह से जिनधर्म के सिद्धांत और आचरण के पालन के अनेक लाभ हैं और सबसे बड़ा लाभ हम दुर्गति से बच जाते हैं और आत्म स्वरूप के नजदीक आते हैं।

– विराग शास्त्री

चेतावनी

प्लास्टिक में भोजन खतरनाक...

मॉडर्न और आसान जीवन शैली के दौर में हमारे किचन में प्लास्टिक के प्रयोग को काफी बढ़ा दिया है। घर, बाजार, रास्ते सब जगह प्लास्टिक का ढ़ेर। घरों में फ्रिज प्लास्टिक के कंटेनर्स से भरा रहता है। पानी की बोतल से लेकर खाने की लगभग सभी चीजें प्लास्टिक में स्टोर की जातीं हैं। प्लास्टिक के बर्तनों में भोजन, चाय, पानी का चलन भी बढ़ गया है। प्लास्टिक के इन कंटेनरों की क्वालिटी इतनी खतरनाक होती है कि ये भोजन पर बुरा असर डालते हैं और वही भोजन सभी खा रहे हैं। यह प्लास्टिक धीरे-धीरे जहर बनकर हमारे खून में मिल रहा है। आंखों से न दिखने वाले इसके कण किडनी और लीवर को खराब कर रहे हैं, जो कि कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी की बड़ी वजह बन रहा है।

भारत की आबादी 1 अरब 40 करोड़ है और हर दिन 26000 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। दुनिया में हर साल 46 करोड़ प्लास्टिक का उत्पादन होता है इसमें से लगभग 35 टन कुछ ही दिनों में कचरा बन जाता है। 3 करोड़ टन से अधिक प्लास्टिक सागर, नदियों, तालाबों में फेंका जा रहा है। यह पर्यावरण के लिये भी बहुत खतरनाक है।

1- प्लास्टिक में स्टोर किये गये भोजन में हानिकारक तत्व और केमिकल मिल जाते हैं जो घातक बीमारियों के कारण बनते हैं।

2- भोजन में लगातार प्लास्टिक के बर्तनों का प्रयोग करने से गर्भावस्था के दौरान बच्चे के विकलांग होने का खतरा होता है।

3- ब्लड प्रेशर, टाइप 2 डायबिटीज, हार्ट अटैक आदि की भी संभावना रहती है।

4- प्लास्टिक का अधिक प्रयोग अस्थमा और पल्मोनरी कैंसर को कारण हो सकता है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायरन मेंटल हेल्थ साइंसेज के अनुसार 5 मिलीमीटर और इससे छोटे आकार के प्लास्टिक कणों को माइक्रोप्लास्टिक कहते हैं। इसे तरह समझिये कि एक बेडशीट के 10 लाख टुकड़े करने पर एक टुकड़े को माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है। ये माइक्रोप्लास्टिक पानी की बोतल, खाने के डिब्बे, टूथब्रश आदि के माध्यम से हमारे शरीर में पहुँचते हैं।

एक नई टेक्नोलॉजी जिसे स्टिमलेटेड रमन स्कैटरिंग माइक्रोस्कोपी कहा जाता है। यह मशीन प्लास्टिक के बारीक कणों को गिन लेती है। इस मशीन के द्वारा जांच करने पर पता चला कि एक लीटर प्लास्टिक की बोतल के पानी में 2 लाख 40 हजार प्लास्टिक के सूक्ष्म टुकड़े होते हैं।

प्लास्टिक के डिब्बे पर लिखे क्वालिटी मार्क से उसकी विशेषता पता चलती है। यह मार्क मात्र कंपनी के प्रोडक्टस पर ही उपलब्ध होता है।

2, 4, 5 - ये भोजन रखने और खाने के लिये सुरक्षित माने जाते हैं।

6- इसका मतलब पॉलीस्टाइनिन या स्टायरोफोम है अर्थात् इसे दोबारा प्रयोग किया जा सकता है।

1- इसका अर्थ इसे मात्र एक बार ही प्रयोग में लेना है फिर इसे नष्ट करना चाहिये।

3- यह पीवीसी यानि पॉलीविनाइल क्लोराइड से बना है जो कि अत्यंत खतरनाक होता है।

7- यह सबसे खतरनाक माना गया है। इसमें काफी मात्रा में बीपीए होता है इसमें खाने पीने की चीजें नहीं रखना चाहिये।

वैसे तो भोजन के लिये प्लास्टिक के बर्तन का प्रयोग न कर स्टील या तांबे के बर्तन प्रयोग करना चाहिये।

प्रयास करें - • गर्म भोजन प्लास्टिक के कंटेनर में न रखें। • बच्चों को स्कूल ले जाने के लिये स्टील के टिफिन दें। • प्लास्टिक के डिब्बों का प्रयोग करते हैं तो उन्हें समय-समय पर अच्छी तरह धोते रहें। • प्लास्टिक के डिब्बों में गर्म भोजन या रसीला भोजन रखने से बचें।

जितना संभव हो प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग करें, सावधानी रखें। सावधानी ही सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है।

कुछ घटनायें जिनका उत्तर विज्ञान के पास नहीं है...

लेटले फ्रांस में एक बार भयंकर तूफान आया और तेज बिजली कड़की और एक किसान के फार्म हाउस पर गिरी। इस फार्म हाउस पर हजारों काली और सफेद भेड़ें थीं। भयंकर बिजली गिरने से किसी भी भेड़ के बचने की संभावना नहीं थी परन्तु यह आश्चर्य था कि बिजली गिरने से सारी काली भेड़ें मर गईं और सफेद भेड़ों को कुछ भी नहीं हुआ।

1829 में लन्दन में चार्ल्स बर्थ नाम के बच्चे का जन्म हुआ। प्रायः चार वर्ष के बालक ढंग से बोल भी नहीं पाते परन्तु चार्ल्स बर्थ चार वर्ष में पूर्ण वयस्क हो गया, उसकी दाढ़ी-मूंछ आ गई और उसका व्यवहार भी किसी युवा के जैसा था। सात वर्ष में उसके पूरे बाल सफेद हो गये और इसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गई।

इटली में एक व्यक्ति ऐसा था जिसका शरीर तो सामान्य था परन्तु उसकी आंखें उल्लू के जैसी थीं। वह दिन में नहीं देख पाता था। 46 वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई।

लन्दन में जन्मे एडवर्ड मार्डो नामक एक अंग्रेज के सिर तो एक था परन्तु उसके आगे-पीछे दो चेहरे, मुंह, आंख और नाक दोनों ओर थे और कमाल की बात तो यह थी वह दोनों ओर से देख सकता था।

पेरिस में एक विख्यात वकील जैक्विसल हरवेट 4 वर्ष की आयु के बाद 72 वर्ष की उम्र तक एक क्षण भी नहीं सोये। उन्हें नींद ही नहीं आती थी और आश्चर्य यह था कि 68 वर्ष तक लगातार जागने पर भी उनके स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। वे मृत्यु तक पूर्ण स्वस्थ रहे।

1957 में केन्टुवी बाल गृह लंदन में एक छः वर्ष के गरीब बालक बॉबी को लाया गया। वह बहुत कमजोर था और उसे अनेक बीमारियाँ थीं। उसका इलाज कर रहे डॉक्टरों को यह जानकर अचंभा हुआ कि अविकसित शरीर वाले और अनपढ़ बॉबी को लैटिन, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, टर्किश भाषा सहित पाँच कठिन भाषाओं को अच्छी तरह जानता था। 12 वर्ष की उम्र तक उसे बीस भाषायें आने लगीं थीं।

1981 में शिकागो में एक ऐसा मामला आया कि एक व्यक्ति को बुखार आने पर उसकी सारी चमड़ी लाल पड़ जाती थी और उसके बाद बड़े टुकड़ों में सांप की केंचुली की तरह परत निकलती थी और नई चमड़ी आ जाती थी।

1956 में विदेश में जान जेकप मधुमक्खी पालन केन्द्र में काम करता था। जब उसकी मृत्यु हुई तो लाखों मधुमक्खियाँ एक घण्टे तक उसके मृत शरीर के पास मंडरातीं रहीं और किसी को उसके शरीर के पास नहीं आने दिया।

1877 में नेवादा अमेरिका में एक पहाड़ी पर एक भीमकाय मनुष्य के घुटने की हड्डी मिली जिसकी लम्बाई 19 इंच थी। वैज्ञानिक इसका रहस्य नहीं खोज पाये।

पूर्वी कोरिया में चीनी सैनिकों के आक्रमण से कोरिया के राजा की मृत्यु हो गई। चीनी सेना राजमहल की ओर बढ़ने लगी। जब राजा की 70 रानियों को यह पता चला तो शत्रुओं के हाथों में आने से पहले उन सभी ने नदी में कूदकर बलिदान दे दिया। आश्चर्य यह है कि प्रतिवर्ष नदी किनारे 70 पौधे उगते हैं और उनमें फूल भी खिलते हैं और बलिदान वाले दिन पर एक साथ सारे फूल नदी में गिर जाते हैं।

लन्दन के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. फिलिप्स के अनुसार वे एक ऐसे भारतीय व्यक्ति से मिले जो अपने दिल की धड़कन रोक लेता था। यह प्रयोग उन्होंने स्वयं देखा और मशीन से चेक किया कि उसकी धड़कन दो मिनिट के लिये बंद हो गई और बाद में वह उङ्कर बैठ गया।

ऐसी अनेक घटनायें विज्ञान को भी मौन रहने पर मजबूर कर देतीं हैं क्योंकि उसके उत्तर विज्ञान के पास नहीं हैं परन्तु जैन धर्म के पास हैं। यह सब कर्म व्यवस्था है। विश्व के स्वाधीन परिणमन के प्रमाण हैं। कोई काम किसी के करने से नहीं होता, जिसका जैसा उदय होता है वह कार्य सहज ही होता है।

कविता

बंदर मामा

बंदर मामा कहाँ चले,
पूंछ दबाकर भाग चले ।
परम दिगम्बर मुनि पधारे
दर्शन करके कर्म जले ।।

नई साल-नई बात

सन् 2024 प्रारंभ हो गया। यद्यपि ये जैन धर्म के अनुसार नया वर्ष नहीं है फिर भी पूरा विश्व तो 1 जनवरी को नये वर्ष का शुभारंभ मानता ही है। आपने भी इसी रूप में नया वर्ष मनाया होगा तो कुछ नई शुरुआत भी होना चाहिये।

1. नये वर्ष से एक नियम करें कि यदि आप सुबह मंदिर नहीं जा पाते तो कम से कम शाम को जिनमंदिर जाना है और जिस दिन शाम को भी मंदिर न जा पायें तो उस दिन घर पर कम से कम 27 बार शांतिपूर्वक णमोकार मंत्र को बोलना है।
2. जब भी मंदिर जायेंगे तो मंदिर की गुल्लक में दान अवश्य करेंगे भले ही 5 रु. हो 50 रु.।
3. हर रविवार को सुबह उठकर अपने माता-पिता और दादा-दादी के चरण स्पर्श अवश्यक करना है।
4. सप्ताह में एक बार जैन धर्म की कोई भी एक कहानी जरूर पढ़ेंगे।
5. अपने दोस्तों की बर्थडे पार्टी में बाजार का केक नहीं खायेंगे क्योंकि उसमें अण्डा होने की संभावना है, यदि उसमें अण्डा नहीं है और वह केक घर का है तो खा सकते हैं।
6. 15 दिन में कम से कम एक बार अपने किसी एक रिश्तेदार मामा-मामी, चाचा-चाची, उनके बच्चों को फोन जरूर करेंगे और फोन पर अच्छी-अच्छी बातें करेंगे।

इन नियमों को अपनायें और सबके प्यारे हो जाइये।

प्रेरक प्रसंग

गोखले की ईमानदारी

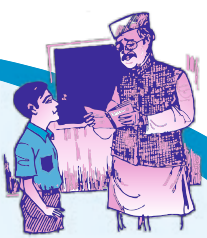

एक शिक्षक ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों से कुछ प्रश्नों का उत्तर याद करके बिना देखे घर से लिखकर लाने को कहा। दूसरे दिन शिक्षक ने सभी विद्यार्थियों की कॉपियाँ चेक कीं तो मात्र एक छात्र की कॉपी में प्रश्नों के सही उत्तर थे बाकी सभी छात्रों के उत्तर गलत थे। शिक्षक ने उस छात्र की प्रशंसा की और उसे पुरस्कार देने लगे। उस छात्र ने पुरस्कार तो नहीं लिया बल्कि जोर-जोर से रोने लगा। शिक्षक को बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने उस छात्र से इसका कारण पूछा।

उस छात्र ने हाथ जोड़कर कहा - महोदय! आप यह समझ रहे होंगे कि इन प्रश्नों के उत्तर मैंने याद करके बिना देखे लिखे हैं परन्तु यह सच नहीं है। इन प्रश्नों के उत्तर के लिये मैंने अपने एक मित्र की सहायता ली है। आप ही बताईये कि क्या मैं इस पुरस्कार के योग्य हूँ या सजा के योग्य ?

यह सुनकर शिक्षक बहुत प्रसन्न हुये और उसे पुरस्कार देते हुये कहा - अब यह पुरस्कार मैं तुम्हें सच बोलने के लिये दे रहा हूँ। सच बोलने वाला यही बालक भारत के प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गुरुदेव की करुणा

मुम्बई के प्रसिद्ध आजाद मैदान में मई के माह में आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजी स्वामी की जन्म जयंती मनाई जा रही थी। इसमें गुरूदेवश्री को भी पधारना था। उसी मैदान के बाहर जैन समाज के अन्य समूह कानजी स्वामी का विरोध करने के पहुँच गये। इनमें से कई लोगों ने कानजी स्वामी को देखा भी नहीं था। सब मिलकर हाथों में विरोध के बैनर लेकर कानजी स्वामी मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। मई का महीना होने से बहुत कड़क धूप थी और भीषण गर्मी थी। तभी कानजी स्वामी कार से वहाँ निकले तो उन्होंने विरोध करने वालों को देखा तो उन्होंने साथ आये साधर्मी से पूछा कि यह क्या हो रहा है? तो साधर्मी ने उत्तर दिया कि गुरूदेवश्री ये सब लोग आपका विरोध करने आये हैं। तो गुरूदेवश्री बोले - विरोध तो ठीक है, पहले इन लोगों की छांव की कोई व्यवस्था करो। बेचारे इतनी गर्मी में धूप में बाहर खड़े हुये हैं।

यह थी गुरुदेवश्री करुणा।

ऐसी नौकरी ही नहीं करना

आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजी स्वामी सौराष्ट्र के महान व्यक्तित्व हुये। वे देव-शास्त्र-गुरू के परम उपासक थे। अपने सारे जीवन में उन्होनें आत्मा को जानने पर जोर दिया। उनके लगभग 9000 व्याख्यान आज भी उपलब्ध हैं। एक बार उनसे एक युवक ने पूछा - गुरूदेवश्री! मैं मुम्बई में रहता हूँ और नौकरी करता हूँ। मेरे ऑफिस से घर बहुत दूर है इसलिये घर पहुँचते - पहुँचते रात्रि हो जाती है और न चाहते हुये भी रात्रि में भोजन करना पड़ता है। आप बतायें - हम क्या करें ? तो गुरूदेवश्री ने एक ही उत्तर दिया कि यदि ऐसा है तो नौकरी छोड़ दो। जिस आजीविका में जैन के सामान्य गुणों का पालन न हो सके वह नौकरी ही नहीं करना चाहिये। यह है महान पुरुषों का उत्तर।

रात्रि भोजन न करना तो जैनत्व का लक्षण है। किसी भी सामान्य जैन को रात्रि भोजन की अनुमोदना भी नहीं करनी चाहिये।

प्रेरक प्रसंग

महापुरुषों की विनम्रता

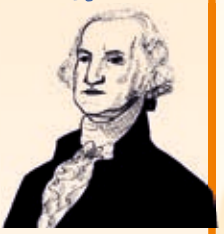

एक दिन अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन घोड़े पर सवार होकर भ्रमण के लिये बाहर निकले। रास्ते में एक स्थान पर देखा कि एक मजदूर एक भारी लकड़ी को छत पर चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे और सामने एक ठेकेदार उन मजदूरों से काम करवा रहा था। लेकिन लकड़ी वजनदार होने से बहुत मुश्किल हो रही थी यदि एक व्यक्ति सहयोग कर देता तो लकड़ी आसानी से चढ़ जाती। ठेकेदार खड़ा होकर उन मजदूरों का साहस तो बढ़ा रहा था परन्तु सहयोग नहीं कर रहा था। राष्ट्रपति ने ठेकेदार से कहा कि तुम लकड़ी में हाथ क्यों नहीं लगा देते ?

ठेकेदार ने गुस्से में कहा - मैं ठेकेदार हूँ। मेरा काम मजदूरों से काम लेना है, खुद काम करना नहीं। राष्ट्रपति ने कहा - अच्छा! यह बात है। इतना कहकर राष्ट्रपति स्वयं घोड़े से उतर गये और उन मजदूरों का सहयोग करके लकड़ी छत पर चढ़वा दी। फिर राष्ट्रपति ने उस ठेकेदार से कहा- नमस्कार साहब। भविष्य में फिर कभी सहयोग की आवश्यकता तो मुझे बुला लेना मैं फिर हाजिर हो जाऊँगा। मेरा नाम जार्ज वाशिंगटन है।

राष्ट्रपति को सामने देखकर ठेकेदार उनके चरणों में गिर गया और क्षमा याचना करने लगा।

विनम्रता महापुरुषों का गुण है और महान बनने के लिये विनम्रता एक सीढ़ी है।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे

एक बार एक जगह कुछ मित्र बैठे थे। वे ईश्वर के न्याय – अन्याय पर चर्चा कर रहे थे। एक व्यक्ति बोला भगवान कितना निर्दयी है,उसे तनिक भी दया नहीं आती,कितने ही लोग भूकंप में मर जाते है,कितने ही बेघर हो जाते है, कितने ही अपंग हो जाते है,बेचारे कष्ट सहते है।इतने में दूसरा व्यक्ति बोला – ईश्वर बड़ा ही पक्षपाती है, दुष्टों को अमीर बना देता है और सज्जनों को गरीब। ये भगवान मेरी तो समझ से बाहर है।इतने में तीसरा व्यक्ति बोला भाई! इस संसार में ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं, सब बकवास की बातें हैं।इतने में चौथा बोला – हाँ! सही कहते हो भाई! किन्तु हमारे शास्त्र तो ईश्वर को बताते है, मुझे तो लगता है ईश्वर होगा भी तो किसी तानाशाह की तरह होगा।इसी तरह लोगों की बातचीत चल रही थी कि पास में एक तत्वज्ञानी व्यक्ति उनकी बातें सुन रहे थे। वह उन लोगों के पास आये और बोले भाइयो! मैं तुम्हारी बातें सुन रहा था । चलो आओ मेरे साथ! आप सभी को एक अजूबा दिखाना है। सभी आश्चर्य से उसके साथ चल दिए।वे तत्वज्ञानी पुरुष सभी को खेतों की ओर ले गये और दो खेतों के बीचों बीच जाकर खड़े हो गये, एक तरफ थी फूलों की खेती और दूसरी तरफ थी तम्बाकू की

समर्पण

सम्राट हर्ष के शासन के समय 600 - 6500 ई. एक चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत देश की यात्रा पर आया। यात्रा के समय उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण और दुर्लभ ग्रन्थ एकत्रित कर लिये। जब वे अपने देश चीन वापस जाने लगे तो सम्राट हर्ष से उन ग्रन्थों को अपने साथ चीन ले जाने की अनुमति मांगी। सम्राट हर्ष ने प्रसन्न होकर इसकी अनुमति दी और ग्रन्थों को चीन ले जाने के लिये एक जहाज और ग्रन्थों की सुरक्षा के लिये 20 युवा तैराक दिये और उन तैराकों को आदेश दिया कि इन ग्रन्थों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाये।

चीनी यात्री ह्वेनसांग भी अपनी इस विदाई पर आश्चर्यचकित हो रहा था। वह प्रस्नतापूर्वक भारत से रवाना हुआ और यात्रा के चौथे दिन समुद्र में तूफान की आशंका होने लगी। कुछ देर बाद जोर से हवा चलने लगी और जहाज डगमगाने लगा। संकट देखकर जहाज के प्रमुख ने कहा कि जहाज की सुरक्षा के लिये जहाज का भार कम करना होगा इसलिये पहले ग्रन्थों को पानी में बहाकर भार करना होगा। युवा तैराक सैनिकों ने कहा - हमारे जीवन से अधिक मूल्यवान ये ग्रन्थ हैं। हम सब पानी में तैरकर जायेंगे भले ही हमारी मृत्यु हो जाये। इतना कहकर सभी सैनिक पानी में कूद गये और तैरने लगे। तूफान शांत होने के बाद नाव पर वापस आये।

ह्वेनसांग यह देखकर चकित रह गया उसने उन युवा तैराकों से पूछा कि आप सबने इन निर्जीव ग्रन्थों की रक्षा के लिये अपने प्राणों को संकट में क्यों डाला? जीवन इन ग्रन्थों से अधिक मूल्यवान है। तब युवा तैराकों ने कहा - ये ग्रन्थ मात्र कागज नहीं हैं बल्कि हमारी संस्कृति के प्राण हैं, यदि हमारी संस्कृति जीवित है तो हमारे जीवित रहने का महत्व है। यदि हमारी संस्कृति ही नहीं रहेगी तो हमारे जीवित रहने का कोई मूल्य नहीं है। ह्वेनसांग उनके इस उत्तर को सुनकर मन ही मन भारत की संस्कृति को नमन किया।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे का शेष भाग

खेती।दार्शनिक बोले–धरती भी कैसा अन्याय करती है, एक फसल से खुशबू आ रही है और दूसरी तरफ से बदबू।उनके पास खड़े लोग बोले... नहीं नहीं श्रीमान! ये दोष धरती का नहीं, उसमें बोये गये बीज का है। जहाँ फूलों के बीज बोये गये वहाँ से खुशबू आ रही है और जहाँ तम्बाकू के बीज बोये गये वहाँ से बदबू आ रही है,इसमें धरती का क्या दोष? धरती को दोष देना उचित नही।वे ज्ञानी बड़े विनम्र भाव से बोले–जी! आपका कहना शत प्रतिशत सही है, धरती को दोष देना मेरी मुर्खता है । किन्तु मुझे यह बताइए कि ईश्वर के संसार रूपी खेत में ईश्वर को दोषी ठहराना कहाँ की समझदारी है, जो आप ईश्वर को अन्यायी और पक्षपाती कह रहे थे।मनुष्य जैसे कर्मों के बीज अपने जीवन मे बोयेगा, उसको वैसा ही फल प्राप्त होगा, वैसी ही उसकी फसल होगी, इसके लिए ईश्वर को दोष देना कहाँ तक उचित है? सच में तो ईश्वर अकर्ता है। वह किसी का भला– बुरा नहीं करता, संसार में प्रत्येक जीव अपने परिणाम का ही फल भोगता है।सभी को बात समझ आ गई ।

निराली उदारता

हिन्दी के विख्यात कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' इलाहाबाद में तांगे पर बैठकर जा रहे थे। रास्ते में एक दुबली पतली, भूख से व्याकुल बूढ़ी महिला ने कवि से भीख मांगी तो त्रिपाठीजी ने तांगा रोककर उस महिला से पूछा - माताजी! आप भीख क्यों मांग रही हो तो बूढ़ी महिला रोते हुये बोली - भाई! आज सुबह से भूखी हूँ। आज किसी ने भीख नहीं दी। चार आने मिल जायें तो कुछ खा लूँगी। इतना सुनते ही उदार हृदय त्रिपाठीजी के आंखों में आंसू आ गये और उस महिला से पूछा कि माताजी! यदि मैं आपको एक रुपया दूँ तो कब तक भीख नहीं मांगोगी ? इस पर महिला बोली - दो तीन दिन भीख नहीं मांगूगी।

त्रिपाठीजी ने फिर पूछा - यदि मैं पाँच रुपये दूँ तो ...

महिला हाथ जोड़कर बोली - दस पन्द्रह दिन तक

यदि पचास रुपये दूँ तो

दो तीन महीने तक

और 800 रुपये दूँ तो ...

कोई काम शुरु कर लूँगी और जिन्दगी भर भीख नहीं मांगूगी।

त्रिपाठीजी ने उसे महिला को 800 रुपये देते हुये कहा कि माताजी! ये लो रुपये और आज से कभी भीख मत मांगना। जब त्रिपाठीजी घर पहुँचे तो उनकी जेब तो खाली थी परन्तु उनका हृदय आनंद और संतोष से भर गया था।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि "चहकती चेतना" के नाम से

"चहकती चेतना" के

पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं ।

कथा सुनो पुराण की -

परीक्षा

कच्छ देश में रोरक नाम का नगर था। वहाँ के राजा का नाम उद्दायन और रानी का नाम प्रभावती था।

एक बार स्वर्ग के देवों में चर्चा हुई कि मध्य लोक के भरत क्षेत्र में राजा उद्दायन बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति वाला है और उसे ग्लानि (Guilt) नहीं होती। उन देवों में से एक वासव नाम के देव के मन में विचार आया कि जब ये देव राजा उद्दायन की इतनी प्रशंसा कर रहे हैं तो एक बार स्वयं जाकर परीक्षा करके देखना चाहिये। वासव देव ने मुनिराज का रूप बनाया और रोरक नगर में पहुँच गया। वासव देव ने अपने शरीर को बहुत गंदा और दुर्गन्धित शरीर वाला बना लियाा। राजा को मुनिराजों के प्रति बहुत भक्ति थी उन्होंने मुनिराज के दुर्गन्ध से भरे गंदे शरीर को न देखकर उन्हें रत्नत्रयधारी समझकर आहार के लिये उनका पड़गाहन किया और अपने चौके में ले जाकर ऊंचे आसन पर बिठा दिया। राजा-रानी ने मुनिराज की अष्टद्रव्य से पूजा की और भक्ति भाव से आहार कराया। उस वेशधारी मुनि ने आहार के बाद परीक्षा करने के लिये वहीं पर वमन (Vomit) कर दिया। उस वमन की बदबू इतनी ज्यादा थी कि वहाँ पर खड़े हुये सेवक वह बदबू सहन नहीं कर सके और वहाँ से भाग गये, वहाँ मात्र राजा और रानी ही बचे। उस मुनि ने दुबारा राजा और रानी के ऊपर ही वमन कर दिया।

इतना होने पर भी राजा और रानी ने मुनिराज से ग्लानि नहीं की बल्कि वे स्वयं को ही दोष देने लगे हे प्रभो! मुझ पापी से ही कोई अपराध हो गया है जिससे आहार में विघ्न हुआ और मुनिराज को वमन हो गया। वह अत्यंत विनम्र भाव से क्षमा याचना करते हुये मुनिराज के ऊपर की गंदगी को साफ करने लगा। वासव देव ने राजा उद्दायन की मुनिराजों के प्रति असीम भक्ति और समता भाव देखकर अपना असली रूप प्रगट कर लिया और राजा को नमस्कार कर उसकी बहुत प्रशंसा की और अपने आने का प्रयोजन बताकर जिनधर्म की जय-जयकार करते हुये वासव देव वहाँ से चला गया।

यही राजा उद्दायन सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में से निर्विचिकित्सा नाम के अंग में प्रसिद्ध हुये।

हमारी संस्कृति का इतिहास

गुजरात के प्रसिद्ध जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में भगवान आदिनाथ जिनालय के बाजू में खुदाई के दौरान एक गुफा से अनेक दिगम्बर प्रतिमायें निकलीं हैं। यहाँ से अभी प्रतिमायें निकलने की संभावना है। एक अनुमान के अनुसार जो प्रतिमायें प्राप्त हुईं हैं वे 5000 वर्ष प्राचीन लग रहीं हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन प्रतिमाओं की बनावट सिंधु सभ्यता से प्राप्त दिगम्बर प्रतिमाओं से काफी मिलती है।

सीख ...

अगर आराम चाहते हैं तो सीखना छोड़ दीजिए और
अगर सीखना चाहते हैं तो आराम छोड़ दीजिए ।

एक शिवमंदिर जो कभी जैन मंदिर था

JAINO KA ATULIYA ITIHAS - Ancient Jain Temple converted to Shiv Hindu temple Yavat Pune
ITERNATIONAL JAIN FOUNDATION – 544 - Atul Bafna

Ancient Jain Temple converted to Shiv Hindu temple Yavat Bhuleshwar situated around 45 kms from Pune Maharashtra. Jain temple built in 10 century by Chalukya Dynasty. Where ever you see ancient Shiv temple please observe carefully you might see tirthankaras images carving on the wall or at the entrance. Thanks to Mr. Sameer Jain for photos and details.

समय समय पर हमें जानकारी मिलती रहती है कि अनेक प्राचीन हिन्दू मंदिरों में जैन मंदिरों के अवशेष या प्रतिमायें प्राप्त हुईं। इससे सिद्ध होता है कि हमारे जैन धर्म का प्रभाव पूरे विश्व में व्याप्त था।

पूना से 40 किमी की दूरी पर यावत भूलेश्वर नामक स्थान पर एक शिवमंदिर है। प्राप्त प्रमाणों के अनुसार यह मंदिर लगभग 1200 वर्ष पुराना अर्थात् दसवीं शताब्दी का है। कहा जाता है यह मंदिर चालुक्य राजाओं के समय निर्मित हुआ। चालुक्य राजा जैन धर्म को बहुत आदर दिया करते थे। यहाँ गुफायें हैं। वर्तमान में यह प्रसिद्ध शिव मंदिर हो गया है परन्तु मंदिर के अंदर जाने पर अनेक जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें दिखाईं देतीं हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह प्राचीन समय में यह शिवमंदिर नहीं बल्कि जैन मंदिर था जिसे बाद में कब्जाकर शिवमंदिर बना दिया गया।

बुढ़िया के बाल खतरनाक है...

आपने बचपन में बुढ़िया के बाल बहुत खाये होंगे इसे कॉटन कैंडी भी कहा जाता है। अभी तमिलनाडु सरकार ने कॉटन कैंडी के उपयोग पर रोक लगा दी है। एक जाँच के दौरान सरकार को पता चला कि बुढ़िया के बाल कॉटन कैंडी और दूसरी कई केंडीज में हानिकारक केमिकल की शिकायत मिली है। फूड एंड सेपटी डिपार्टमेंट की जाँच में पता चला कि कॉटन केंडीज को रंग बिरंगा बनाने के लिये जो केमिकल डाले जा रहे हैं वे बहुत खतरनाक हैं। ये कैंसर का कारण बन रहे हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कैंसर का इलाज करने वाले टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल के देश भर के 11 केन्द्रों इस वर्ष 1.25 लाख कैंसर के नये मरीजों का रजिस्ट्रेशन किया गया और इनमें 70 हजार तो मात्र मुम्बई में ही अपना इलाज करवा रहे हैं। देश में प्रतिवर्ष 13 लाख कैंसर के नये मरीज रजिस्ट्रेशन करवा रहे हैं। इनमें हजारों बच्चे भी हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इसका सबसे बड़ा कारण केमिकल से प्रदूषित सब्जियाँ, फल और खाने की प्रदूषित सामग्री है।

कॉटन कैंडीज के कैंसर के साथ दूसरे खतरे भी हैं, बच्चे ज्यादा गुस्सैल और चिड़चिड़े हो जाते हैं। आर्काइव्स ऑफ डिजीज इन चाइल्डहुड की एक स्टडी के अनुसार इन केमिकल्स से ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। फूड कलर केमिकल्स से बनाये जाते हैं। इन्हें खाने-पीने की चाजों को रंग देकर ज्यादा सुंदर और चमकदार बनाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। नेचुरल रंगों के मुकाबले ये केमिकल्स बहुत सस्ते होते हैं। तमिलनाडु सरकार के बैन लगाने के बाद अन्य राज्यों की सरकारें भी सतर्क हो गईं हैं।

कैंडी को कलर देने वाला केमिकल रोडामाइन-बी है। इससे ब्लू, येलो, रेड, ग्रीन और पिंक आदि कलर की कॉटन कैंडी बनती है। यह एक डाई केमिकल है

जिसका प्रयोग कपड़े और लेदर इंड्रस्ट्रीज में किया जाता है। यह यदि खाने में इस्तेमाल किया जाये तो कैंसर का कारण भी बन जाता है। इसलिये तमिलनाडु सरकार ने इस पर बैन लगाया है।

कैसे पता लगायें कि पैकेज्ड फूड में कितने आर्टिफिशियल कलर्स

फूड सेपटी ऐंड स्टेंडर्ड्स ऑथारिटी ऑफ इंडिया के अनुसार यदि अगर फूड डाई इस्तेमाल हुआ है तो लिखा होगा।

बाजार से फल-सब्जियाँ खरीदकर लायें तो उन्हें साफ करने के लिये गुनगुना पानी में नमक डालें और उस पानी से फल-सब्जियाँ धोयें। इससे आर्टिफिशियल कलर निकल जायेगा।

इससे पूरी तरह बचना तो बहुत मुश्किल है फिर भी हम इससे जितना बच सकें तो बड़ी बात होगी।

संक्षिप्त समाचार

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में दिनांक 19 से 26 जनवरी 2024 तक आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में जम्बूद्वीप के अकृत्रिम भगवंतों एवं बाहुबली भगवान की 41 फुट विशाल प्रतिमा विराजमान की गई।

जबलपुर में 21 और 22 फरवरी निर्माणाधीन संकुल धर्मायतन में वेदी और शिखर शिलान्यास पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के मार्गदर्शन में सानंद संपन्न हुआ।

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के छोटे गांव खड़ेरी में दिनांक 6 मार्च से 11 मार्च तक ब्र. अभिनन्दन कुमारजी जैन देवलाली के प्रतिष्ठाचार्यत्व में श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

अब नहीं खिचवाऊँगा

अरे दर्शन! जरा अपना मोबाइल तो दिखा।

हाँ हाँ पथिक! देखो न। मेरी फोटो गैलरी जरूर देखना।

ऐसा क्या खास है ? फोटो गैलरी में ..... क्या कोई खास फोटो है ...?

कोई एक खास फोटो नहीं है, बहुत सारी हैं तुम देखो तो जरा...

अरे वाह! जरा दिखाओ तो...

ये देखो! हमारे यहाँ के विधायक हैं और ये दूसरी फोटो में मंत्रीजी जब हमारे कॉलेज में आये तब उनके साथ की फोटो है।

अच्छा... और तो दिखा

हाँ हाँ दिखाता हूँ। ये देखो जन पार्टी के नगर अध्यक्ष हैं जिसमें मैं उनके पीछे खड़ा हूँ।

लेकिन इसमें तुम इतने पीछे क्यों खड़े हो?

अरे भीड़ बहुत थी न। बस चांस मिल गया फोटो खिचवाने का।

और ये एक्टर सा लगने वाला कौन है ?

अरे ये एक्टर ही है, फिल्मों में काम करता है। बहुत हिट फिल्में दीं हैं। तीन माह पहले मैं जब एयरपोर्ट से बाहर निकल रहा था तो वहीं मिल गया। गार्ड तो फोटो के लिये मना कर रहे थे, जब मैंने रिक्वेस्ट की तो फोटो के लिये तैयार हो गये।

कमाल है यार। तुम तो बड़े आदमी बन गये।

अरे! तुमने अपने यार का कमाल देखा ही कहाँ है... अब देख ये फोटो..

अरे! ये तो फिल्म की हीरोइन है। बहुत फेमस है। ये तुम्हें कहाँ मिल गई ?

बस यार मेरे तो भाग्य ही खुल गये। मैं जब मुम्बई से एयरपोर्ट से फ्लाईट

में बैठा तो मेरी ही सीट के आगे बैठी थी। बस जुगाड़ किया और फोटो खिंच गई।

और ये किक्रेटर के साथ.....

हाँ! नागपुर किक्रेट मैच देखने गया था न तो मेरे चाचा ने फोटो की सेटिंग करवा दी।

लेकिन ये तो मांसाहारी है और अभी इस किक्रेटर ने एक मंदिर में 21 बकरों की बलि दी थी।

तो इससे हमें क्या...? उसकी वो जाने।

अरे भाई! तुम जिनके साथ फोटो दिखाकर बहुत खुश हो रहे हो वे सब पाप और भोगों में लगे हुये हैं। ये नेता, मंत्री चौबीसों घंटे भ्रष्टाचार और अपराधों में लगे रहते हैं, ये फिल्मों के एक्टर्स जिनके जीवन में शील-सदाचार की कोई बात नहीं, भोग विलास, शराब आदि व्यसनों में लगे हुये हैं, ये किक्रेटर्स जो मांसाहारी हैं और तुम इनके साथ फोटो खिंचवाकर सौभाग्य मान रहे हो। फेस बुक, इंस्टाग्राम पर अपलोड करके अपने को महान समझ रहे हो।

अरे पथिक! ये सब सेलिब्रेटीस हैं।

तो इससे हमें क्या..? उनके सेलिब्रेटी होने से हमें क्या लाभ ? और सच कहूँ तो नुकसान ही है। हमारे द्वारा उनकी अनुमोदना का पाप होता है। वास्तव में हमारे सेलिब्रेटी तो अरहंत भगवान, मुनिराज हैं, विद्वान हैं। इनके साथ फोटो होगी तो सौभाग्य है। यदि फोटो सोशल मीडिया पर लगाना ही है तो जिनमंदिरों की, तीर्थ वन्दना, विधान, धार्मिक शिविर या विद्वानों के साथ की फोटो डालो...।

पथिक! तुम शायद सही कह रहे हो

अरे दर्शन! शायद नहीं, सच ही कह रहा हूँ। यदि हम इन भ्रष्ट नेताओं, व्यभिचारी अभिनेताओं, फूहड़ गाना गाने वाले गायकों के साथ फोटो पोस्ट करेंगे तो हमें भी महापाप लगेगा। तुम मेरे दोस्त हो, इसलिये इतना कह रहा हूँ। अपने इस मनुष्य जीवन में अच्छे काम न हो सकें तो कम से कम इन बुरे काम करने वालों की अनुमोदना तो मत करो। वरना पाप का फल तो भोगना ही पड़ेगा।

पथिक! तुम्हारी सारी बातें सही हैं और आज से इन पापियों के साथ फोटो खिंचवाना बंद। अब नहीं खिचवाऊँगा।

– विराग शास्त्री

जिनदेशना खेल महोत्सव सम्पन्न

होली के अवकाश का सदुपयोग करने के लिये आयोजित **जिनदेशना खेल महोत्सव** ऑनलाईन माध्यम से आनंदपूर्वक संपन्न हुआ। दिनांक 24 मार्च से 26 मार्च तक आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों की दृष्टि अनेक रोचक कार्यक्रम और प्रतियोगितायें संपन्न हुईं। इस कार्यक्रम में देश के अनेक नगरों के लगभग 1000 से अधिक बच्चों और साधर्मियों ने सहभागिता की। प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को पोस्ट द्वारा पुरस्कार भेजे जायेंगे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के मार्गदर्शन में संपन्न हुये।

इन पुरस्कारों के प्रायोजक के रूप में निम्न साधर्मियों ने अनुमोदना की -

- **आरव और खुश बगड़ा**, जयपुर
- **ध्याना - श्रीमति भविशा आत्मदीप भायाणी**, चेन्नई
- **अविरल अंकुर शाह**, वसई, मुम्बई
- **निर्जरा राजीव कुमार जैन**, आगरा
- **विशाल कीर्ति भाई शाह**, अहमदाबाद
- **निर्मलजी जैन**, भागलपुर बिहार
- **अयाति हस्ते श्रीमति नीलू जैन**, जयपुर
- **ईर्या - अनय जैन**, जबलपुर
- **अतुल कुमार जैन - इंदू जैन - आयुषी जैन** पल्लवपुरम, मेरठ
- **प्राची जैन**, उत्तम नगर, दिल्ली
- **डॉ. महिमा जैन**, छतरपुर

जिनदेशना परिवार सभी सहयोगियों का आभार ज्ञापित करता है।

आगामी आयोजन

3 से 7 अप्रेल	-	गुरुवाणी मंथन शिविर एवं प्रवेश शिविर - आत्मसाधना केन्द्र, दिल्ली
12 से 14 अप्रेल	-	जिनदेशना आध्यात्मिक शिविर, काठमांडू - नेपाल
16 से 21 अप्रेल	-	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, शिवपुरी
5 से 12 मई	-	आवासीय बाल संस्कार शिविर, जबलपुर
13 से 19 मई	-	26वाँ आवासीय बाल संस्कार शिविर, देवलाली
21 मई से 7 जून	-	शिक्षण प्रशिक्षण शिविर, ललितपुर
28 मई से 4 जून	-	जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर, मध्यप्रदेश
1 से 5 जून	-	जिनदेशना आवासीय बाल संस्कार शिविर, दमोह
6 से 11 जून	-	गुरुवाणी मंथन शिविर एवं श्रुतपंचमी महोत्सव, पिड़ावा
26 से 30 जून	-	चतुर्थ जिनदेशना यूथ कन्वेंशन, लोनावला

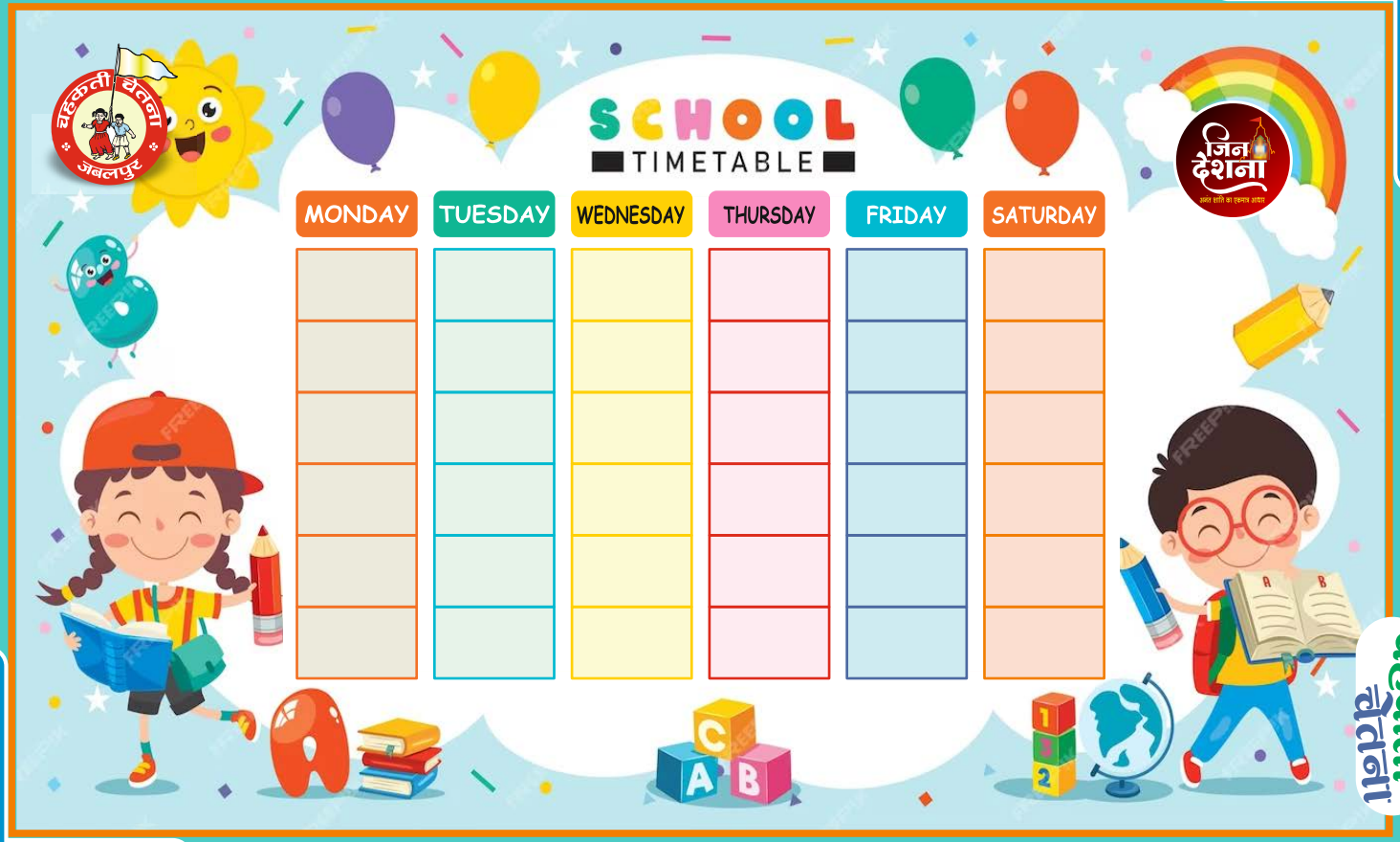

SCHOOL
TIMETABLE
MONDAY
TUESDAY
WEDNESDAY
THURSDAY
FRIDAY
SATURDAY

हमारे नये परम शिरोमणि संरक्षक

श्रीमति कोमल नीरज जैन, दिल्ली

सम्पूर्ण जैन समाज की लोकप्रिय बाल - युवा पत्रिका पिछले 16 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के आलेखों और सामग्री ने आत्मार्थियों ने मार्गदर्शक के रूप में कार्य किया है जिससे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन भी आया है। इस पत्रिका की गतिविधियों से प्रभावित होकर स्वस्फूर्त भावना से दिल्ली निवासी श्रीमति कोमल धर्मपत्नी श्री नीरज जैन ने परम शिरोमणि सरंक्षक पद की स्वीकृति प्रदान की है। श्रीमति कोमलजी समाज के श्रेष्ठी स्व. श्री विमलकुमार जैन नीरू केमिकल्स परिवार की पुत्रवधू हैं।

चहकती चेतना परिवार श्रीमति कोमल धर्मपत्नी नीरजजी के प्रति आभार ज्ञापित करता है।

- संपादक

चहकती चेतना 2024-25 का केलेण्डर प्रकाशित

विगत 16 वर्षों से अनवरत प्रकाशित लोकप्रिय बाल-युवा पत्रिका चहकती चेतना का 2204-2025 का रंगीन केलेण्डर प्रकाशित हो गया है। विगत लगभग 6 वर्षों से प्रकाशित होने वाला यह केलेण्डर प्रतिवर्ष की पद्धति की तरह अप्रेल 2024 से मार्च 2025 तक की तिथि वाला है। इस वर्ष तिर्यंच गति के धर्मी जीवों की प्रथमानुयोग की कहानियाँ दीं गईं हैं। इसके साथ - साथ विशेष पर्व, तीर्थंकरों के पंचकल्याणक तिथि, प्रमुख आध्यात्मिक आयोजन की तिथियाँ भी प्रकाशित की गईं हैं। इसका संपादन एवं संकलन श्री विराग शास्त्री द्वारा किया गया है।

इस केलेण्डर को मात्र पोस्टेज शुल्क पर निःशुल्क पहुँचाया जा रहा है। इस केलेण्डर को प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी 9752756445 पर व्हाट्सएप कर सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

जन्मदिन की मंगल शुभकामनायें

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही
जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

ईर्या जीवन क्षणिक है, आतम अनादि महंत ।
निज में निज की स्वस्ति हो, भोगो सौख्य अनंत।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल

ज्ञायक का श्रद्धान हो, जानो निज का अर्थ ।
निज प्रज्ञा से अभय पद, तो प्यारे तत्वार्थ ।।

तत्वार्थ ज्ञायक जैन, बैंगलोर 18 मई

जिनशासन मंगल मिला, मानो आर्या पर्व ।
सदा धर्म के पथ चलो, प्यारे बेटे धर्व ।।

धर्व सौम्य सेङ्ग, आस्ट्रेलिया 28 मई

जिनशासन अतिशय महा, करता मंगल काम ।
सर्व कर्म कल नाशकर, देता शिव विश्राम ।।

अतिशय देवेन्द्र पाटनी, उज्जैन 28 जून

जोड़ी बनाईये

1. स्वाध्याय
2. श्रीवत्स
3. पंचपरमेष्ठी
4. जिनमंदिर में प्रवेश नहीं
5. अजितनाथजी
6. सोलह स्वप्न
7. अष्ट प्रातिहार्य
8. सप्त व्यसन
9. इन्द्रिय
10. पुदगल का गुण
11. शांतिनाथजी
12. जिनमंदिर के बाहर
13. मुनिराज की शुद्धि का साधन
14. मंदिर शिखर पर

जैनी बच्चों को पाप से दूर हटाकर गुरु के पास पहुँचने का रास्ता बताईये

प्रारंभ

समाप्त

Join the Dots!

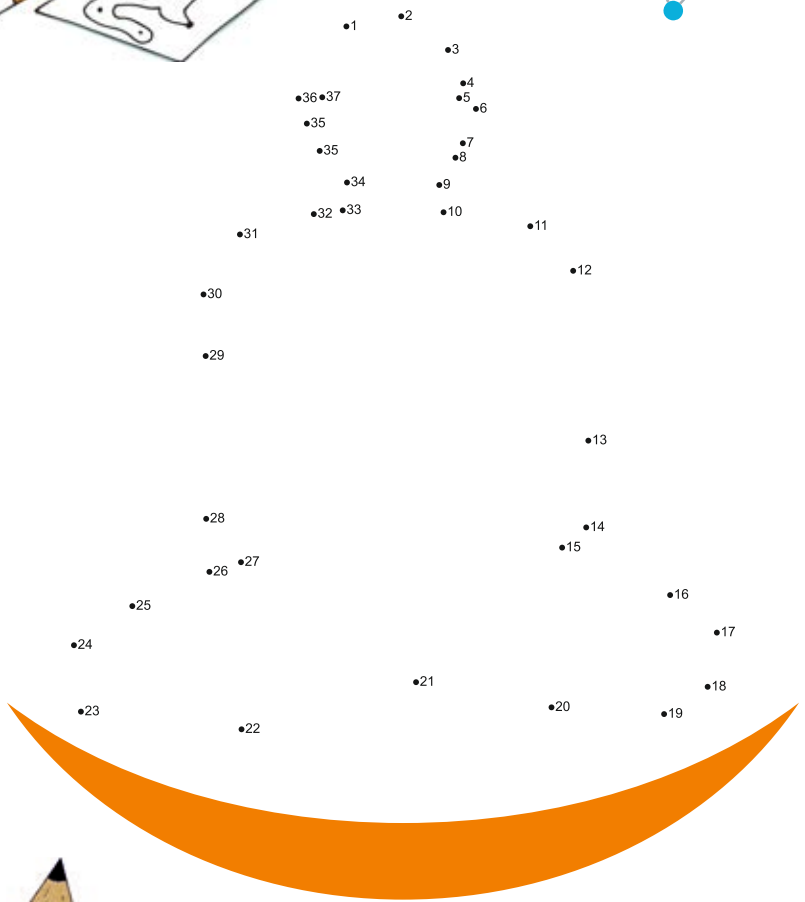

Word Search !

Do you go for teerth darshan in your vacations ?
Search the names of "Teerthkshetra"
given below & write down in front of them
in which state they are.

I	R	U	P	A	P	M	A	H	C	N	X	K
I	R	M	A	H	A	V	E	E	R	J	I	Q
I	J	I	R	A	N	R	I	G	I	N	L	J
R	K	R	G	X	A	Q	V	R	N	B	W	Y
U	P	U	I	H	S	H	I	K	A	R	J	I
P	L	B	M	G	S	G	A	Y	Z	Z	N	X
A	T	B	D	B	A	A	T	R	J	D	N	G
V	P	K	X	T	H	N	L	Z	J	W	G	N
A	V	W	K	N	K	O	O	I	T	I	G	B
P	K	U	Z	Q	D	N	J	S	A	G	W	Q
L	M	R	T	Q	Z	G	D	M	G	K	H	K

Shikharji
Kailashgiri
Girnar
Muktagiri
Kumbhoj

Mahaveerji
Pavapuri
Champapuri
Sonagi
Aharji

Think the Tirthankars' names with the given hints and fill the crossword puzzle.

ACROSS

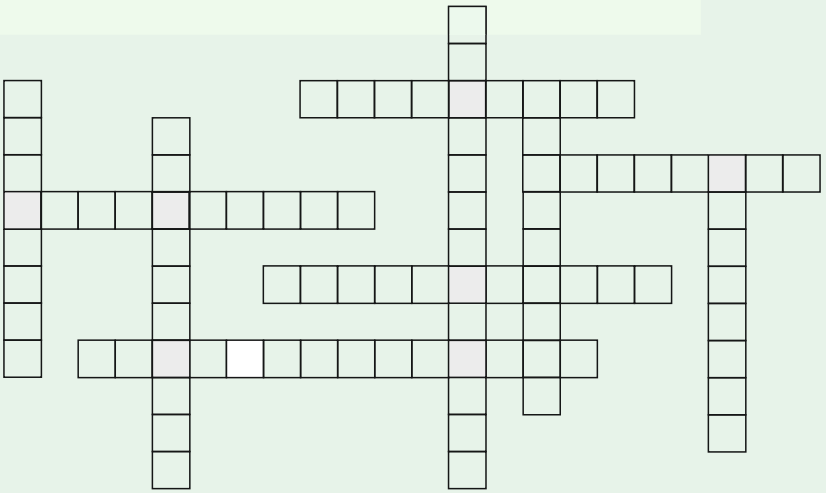

3 *Name of a pracheen acharya*
6 *1st Tirthankar*
8 *Symbol is monkey*
9 *Symbol is serpent*
10 *Includes the word 'monk' of hindi*

DOWN

1 *Includes the name of another tirthankar*
2 *Also known as Vardhman Swami*
4 *Meaning infinite*
5 *Means peace*
7 *Symbol is fish*

Word Search !

Did you learn who Acharyas are ?
Given below are the names of ancient Acharyas.
Search them in this puzzle.

B	H	O	O	T	B	A	L	I	A	R
H	J	P	Y	J	Z	Y	T	R	A	J
A	I	J	U	W	T	A	D	G	T	D
D	N	N	V	S	G	A	A	D	N	T
R	S	T	M	T	H	S	A	U	K	N
A	E	Z	I	B	I	P	K	V	E	N
B	N	M	N	T	A	D	D	S	Z	W
A	A	U	N	Y	N	K	R	A	L	K
H	G	A	J	U	M	E	M	N	N	G
U	H	U	K	D	E	D	G	R	G	T
S	P	L	T	V	Q	B	L	K	Y	M

- Kundkund
- Jinsen
- Shantisagar
- Pushpadant
- Bhootbali

- Veersen
- Bhadrabahu
- Amitgati
- Gunbhadra
- Pujyapad

कर्ता कौन

सूरज दादा कौन है लाता ?
उसे समय पर कौन छिपाता ?
चंदा मामा की मुस्कान,
दिन और रात का कर्ता कौन ?
फूल खिलाये जग में कौन ?
पानी को बरसाये कौन ?
सागर से बादल बन जाते,
कितने काम स्वयं हो जाते ।।

जन्म मरण का चक्र है चलता,
और बुढ़ापा क्यों आ जाता ?
ऐसे उठते प्रश्न अनेक,
इन सबका उत्तर है एक ।।
स्वयं वस्तु करती परिणाम,
पर में नहीं जीव का काम,
ज्ञाता दृष्टा आतमराम,
इसमें करना है विश्राम ।।

छुट्टी आई

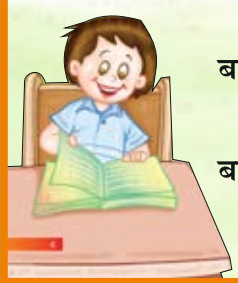

लो गरमी की छुट्टी आई,
छोड़ो पुस्तक और पढ़ाई ।
सुनकर नानी झट मुस्काई,
दी सीख जो समझ में आई ।
खेलो कूदो खाओ मिठाई,
जैन धर्म की करो पढ़ाई ।।
बाल शिविर में जाना है,
सम्यक् ज्ञान को पाना है ।
बात समझ में सबको आई,
लो गरमी की छुट्टी आई ।।

परिणामों की रक्षा करें

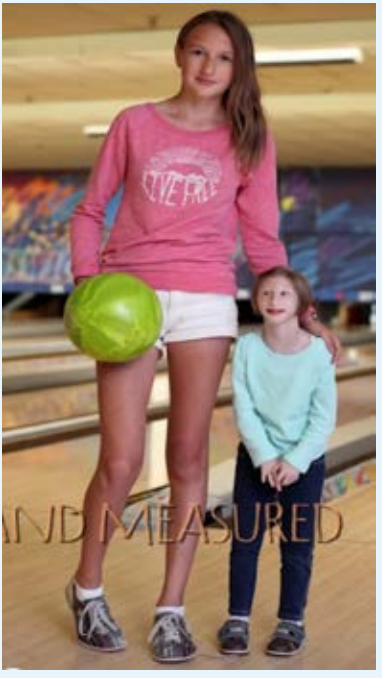

ऐसे क्या पाप किये...

ग्रीष्मकालीन अवकाश

चैतन्य भास्कर

के साथ

एक अभिनव राष्ट्रीय प्रतियोगिता

- जिनधर्म पर आधारित राष्ट्रीय स्तर पर नवीन विधा की एक रोचक प्रतियोगिता ।
- 12 पृष्ठीय चैतन्य भास्कर न्यूज़ पेपर दिये गये निर्देशों से भरिये ।
- तीन आयु वर्ग में और हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ और तमिल भाषा में
- जीतिये ढ़ेरों पुरस्कार
- अपनी प्रतिभा निखारने का अपूर्व अवसर
- सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र

शिविरों, पाठशालाओं और संस्थाओं को विशेष छूट पर उपलब्ध मात्र 30/- रु.

संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर

चैतन्य भास्कर आपको अप्रैल माह में भेजा जायेगा ।

राशि का भुगतान हमारे खाते में या पेटीएम से 9752756445 पर भुगतान करें
हमें अपना पता एस एम एस या व्हाट्सएप करें और पायें घर बैठे चैतन्य भास्कर
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करायें । कहीं चूक न जायें ।

कविता

पतंग

दो रुपया लेकर गया,
मैं भैया के संग ।
जिससे लेकर आ गया,
मांझा और पतंग ।
आसमान में खेल रही हैं,
रंग–बिरंगी पतंग ।
पेंच लड़ाया कट गई,
पक्षी की गरदन ।
नीचे गिरकर मर गया,
देख रह गया दंग,
कभी नहीं उड़ाऊँगा,
हिंसक यह पतंग ।

जिनदेशना का एक और मंगल अभियान

मध्यप्रदेश व बुन्देलखंड के 30 नगरों में

एक साथ आयोजित

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई
स्वर्ण जयंती वर्ष

जिन देशना
अनंत शांति का एकमात्र आधार

जिनदेशना

सामूहिक बाल संस्कार शिविर

रविवार, 28 मई से रविवार, 4 जून 2024 तक

निर्देशक
विराग शास्त्री
जबलपुर, 9300642434

सह-निर्देशक
पंडित आशीष शास्त्री
टीकमगढ़

संयोजक :
पं. भूपेन्द्र शास्त्री, विदिशा
पं. अमित अरिहंत, भोपाल
पं. श्रेयांस शास्त्री, अभाना

सहयोगी संस्थायें :

● श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई ● श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुंबई ● श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर, इंदौर ● श्रीमति कुसुम बिमलजी, श्री रजनीशजी-श्री नीरज जैन परिवार, नीरु केमिकल्स, दिल्ली ● श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन ● मुक्ति मंडल संघ, मुंबई हस्ते डॉ. बासंती बेन शाह ● श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, अजमेर

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपार्ला, मुंबई एवं परमागम प्रभावना ट्रस्ट, पुणे द्वारा आयोजित

गुरुवार, 27 जून से रविवार, 30 जून 2024 तक

चतुर्थ जिन देशना यूथ कन्वेन्शन

by young for young...

कार्यक्रम स्थल :
जयानंद धाम
मुम्बई-पूना हाईवे, लोनावाला, जि.-पूना

LIVE ON
जिन देशना

विद्वत सान्निध्य

- श्री सोनू शास्त्री, अहमदाबाद
- श्री विवेक जी, छिंदवाड़ा
- श्री अनुभव जी, करेली
- श्री विवेक जी मलाड, मुम्बई

निर्देशक
विराग शास्त्री, जबलपुर
9300642434

संयोजक
जितेन्द्र शास्त्री, पुणे
8888822550

सह-संयोजक - आशीष शास्त्री, टीकमगढ़ ▪ अमित अरिहंत, भोपाल

रजिस्ट्रेशन की लिंक प्राप्त करने के लिए 9752756445 पर what'sapp द्वारा संपर्क करें